बंधन और मुक्ति (Bondage and Freedom)

स्पिनोजा के अनुसार भावना, संवेग, कल्पना वासना आदि के वशीभूत होकर कर्म करना ही बन्धन है। यह बन्धन भाव-संवेगों को रोकने में मनुष्य की असमर्थता को इंगित करता है। बन्धन पराधीनता की स्थिति है जिसमें मनुष्य अपने स्वभाव के अनुसार नियत कर्म नहीं कर पाता है। मानव जीवन का लक्ष्य इस बन्धन से मुक्ति पाना है। स्पिनोजा के अनुसार जब मनुष्य बौद्धिक चिन्तन एवं प्रातिभ ज्ञान (Intuitive Knowledge) के अनुरूप जीवन व्यतीत करता है तब स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त होता है।

स्पिनोजा के अनुसार सभी वस्तुओं में अपने स्वरूप में बने रहने की एक शक्ति होती है। वस्तुओं के इस स्वरूप शक्ति को स्पिनोजा ने स्वरक्षण-प्रवृत्ति कहा है। जीवों के अन्दर इस स्वरक्षण-प्रवृत्ति को प्राण-शक्ति कहा जा सकता है। अतः मानव में भी प्राण शक्ति है

Scanned with CamScanner

सिद्ध होता है। अतः जिस ढंग से और जिस क्रम से वस्तुएँ उत्पन्न हुई हैं। उससे भिन्न ढंग और क्रम से वे पैदा नहीं हो सकती।

मनुष्य में भी इच्छा ~~स्वतंत्रता~~ स्वातंत्र्य नहीं है। उसके कर्म पूर्व नियत हैं। हमें जो कुछ भी सुख या दुःख प्राप्त होते हैं वह भाग्य के अधीन है। हम इसमें परिवर्तन नहीं कर सकते। अतः नियति की स्वीकृति ही हमारा कर्तव्य है। इच्छा स्वतंत्रता तो भ्रम (Free will is an illusion) है।

स्पिनोजा के अनुसार - उसी दशा में किसी क्रिया को स्वतंत्र कहा जा सकता है जो किसी वस्तु के अपने स्वरूप से संचालित हो। यदि मानव व्यवहार आत्म - तत्वस्वरूप से संचालित हो तो उसे स्वतंत्र व्यवहार कहा जा सकता है। अतः आत्म - नियंत्रित व्यवहार को स्वतंत्र व्यवहार कहा जा सकता है।

स्पिनोजा के अनुसार - मानव का सार गुण उसकी बुद्धि में है। अतः स्पिनोजा के अनुसार - कोई भी व्यक्ति तभी स्वतंत्र कहा जा सकता है जब ~~वह~~ वह अपनी कल्पना, भावना या संवेग या वाह्य कारणों से संचालित न होकर बुद्धि से कार्य करता है। अपने ही स्वरूप तथा नियमों में अपने को नियत करना परतंत्रता नहीं, स्वतंत्रता है। इसी बुद्धि से स्पष्ट एवं परिस्पष्ट ज्ञान की प्राप्ति होती है। अतः बौद्धिक कार्य ही स्वतंत्र कार्य है। बौद्धिक जीवन ही स्वतंत्र जीवन है। इसी बौद्धिक जीवन को ईश्वर के प्रति बौद्धिक प्रेम (Intellectual Love of God) कहा जाता है। बौद्धिक प्रेम यह बताता है कि सभी घटनाएँ रचनात्मक सत्ता ईश्वर से संचालित हैं। इसलिए

जिसके कारण मानव अपनी जीवित स्थिति में कायम रहता है। यह प्राणशक्ति या तो बाह्य कारणों से या आंतरिक स्वरूप के कारण नियंत्रित होती है। यदि प्राणशक्ति आंतरिक स्वरूप से नियंत्रित हो तो इसे स्वतंत्र क्रिया कहते हैं। परन्तु यदि प्राणशक्ति बाह्य कारणों से नियंत्रित हो तो इसे भाव-संवेग कहते हैं। कामना, सुख और दुःख मौलिक संवेग हैं और इन्हीं के सम्मिश्रण से अन्य संवेग होते हैं। चूँकि भाव-संवेग, वासना आदि बाह्य कारणों से होता है जिन पर जीवों का कोई अधिकार नहीं रहता है। इसलिए इन्हें जीवों का बंधन कहा गया है।

Scanned with CamScanner